काव्य में व्यंजना शब्दशक्ति

B.A
Part-II
Paper-6

(क) काव्य में व्यंजना शब्दशक्ति :- शब्दशक्तियों में तीसरी शब्दशक्ति 'व्यंजना' है। व्यंजना शब्द की निष्पत्ति 'वि + अंजना' दो शब्दों से हुई है। वि उपसर्ग है तथा अंजु प्रकाशन धातु है। व्यंजना का अर्थ है विशेष प्रकार का अंजन। अंजन के लगाने से नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है किन्तु जब विशेष प्रकार से अंजन लगाया जाता है तो परोक्ष वस्तु भी दृष्टिगोचर होने लगती है। "जब अभिधा एवं लक्षणा अर्थ स्पष्ट करने में असमर्थ हो जाती है तब व्यंजनाशक्ति काव्य के छिपे हुए गूढ़ सौंदर्य

जिसका बहुत से रचनाकारों ने अनुकरण किया। कहना न होगा कि अवचेतन सिद्धांत को आधार बनाकर ही चित्रकला के क्षेत्र में 'अतियथार्थवाद' का उद्भव-विकास हुआ है। साथ ही मनोविश्लेषण के प्रभाव से कविता, नाटक तथा कथा-साहित्य में चरित्र चित्रण में नए ढंग की बारीकियाँ आई हैं। युगीन चिंतन से प्रभावित होकर आद्य-बिम्बों, मिथकों और पुराणों के अध्ययन की नवीन दिशाएँ खुली हैं। मनोविश्लेषण की ऐसी बहुत-सी मान्यताएँ जिन्होंने साहित्यालोचन को प्रभावित किया, जैसे

(1) कला यौन-भावना की विकृतियों से मुक्ति का साधन है।
(2) कलाकार मूलतः 'न्यूरोटिक' होता है।
(3) कला की शक्ति उदात्तीकरण है।
(4) कला एक प्रकार की फैंटेसी है
(5) स्वप्न और कल्पना में भीतरी भेद नहीं है।
(6) कला में प्रयुक्त बिम्बों-प्रतीकों-लयों के विवेचन में मनोविश्लेषण की प्रासंगिकता है
(7) आद्य-बिम्बों और सामूहिक अवचेतन से मिथकों का सृजन कार्य सम्पन्न होता है।

इन मान्यताओं पर आलोचनाशास्त्र में बार-बार विचार किया जाता रहा है। यह भी कहा गया है कि वस्तु तथा रूप की व्याख्या तो दूर कलाकृति के मूल्यांकन तथा विभिन्न कलाकृतियों के सापेक्ष्य किन मानसिक व्यापारों के परिणामस्वरूप आकार ग्रहण करती है - पर यह नहीं बता सकता कि कलाकृति के रूप में उसका मूल्य क्या है या मूल्य का आधार क्या है - क्यों है। सृजन यदि सांस्कृतिक प्रक्रिया है तो कलाकृति के सफलता के प्रतिमान क्या हो सकते हैं इसीलिए मार्क्सवादी आलोचना की दृष्टि में मनोविश्लेषण एक प्रविधि - प्रक्रिया मात्र है आलोचना दृष्टि नहीं।